

झकझोरती है 'सैनिक पत्नियों की कथा और व्यथा'

सैनिकों के जीवन को हम आसानी से समझ सकते हैं। हम समझ सकते हैं उनकी कठिनाइयों को; उनके खतरनाक प्रशिक्षण को; उनकी जांबाजी को और उनके जीवन की परिस्थितियों को। युद्ध के दौरान कैसी भीषण परिस्थितियों में वह देश की रक्षा करते हैं सरहदों की रक्षा करते हैं। इन सब के सापेक्ष हम भूल जाते हैं उनकी पत्नियों की व्यथा को। सैनिक पत्नियाँ कैसी परिस्थितियों में कीस तरह के हालात में स्वयं को और अपने परिवार को जोड़कर रखती हैं, उनकी कथा व्यथा को पुस्तक 'सैनिक पत्नियों की कथा और व्यथा' में संजोया है संपादक वंदना यादव जी ने।

संपादक वंदना यादव ने अपने लेखन के बल पर साहित्यकार के रूप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित की है। उनके दो उपन्यास 'कितने मोर्चे' और 'शुद्धि' निरंतर चर्चा में रहे हैं। वे कविता लेखन भी करती हैं और बाल साहित्य में भी उनकी अपनी पहचान है। इन सबसे अलग संपादक के रूप में, उनकी यह किताब विश्व पुस्तक मेले में हम सब के समक्ष आई है। चिखुरी उनका चर्चित बाल उपन्यास है।

इस पुस्तक में संपादक ने 11 सैनिक पत्नियों के जीवन की कथा-व्यथा को समाहित किया है। अनंदर मान दीमापुर और जयपुर के प्राथमिक विद्यालय में मुख्य अध्यापिका रही। उन्होंने 1986 में अपने विवाह के समय से आगे के जीवन की परिस्थितियों को बड़े सुंदर ढंग से संस्मरण में संजोया है। उन्होंने अपने कप्तान पति के साथ वाले मुश्किल दौर को भी साफगोई से लिखा है। अब सेवानिवृत्ति के बाद वह चंडीगढ़ में पिछड़े वर्ग के परिवारों की बच्चियों की शिक्षा के लिए काम कर रही हैं। सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी हुई हैं।

दूसरा संस्मरण है डॉक्टर अनुपम गुप्ता का; वह शिक्षिका रही हैं और वर्तमान में लखनऊ में रहकर भी ऑनलाइन टीचिंग करती हैं। वह लिखती हैं, 'आज जब अपने फौजी जीवन की डायरी के पन्ने पलटने बैठी



तो मन भीतर तक भोग गया। ऐसा लगा की इस छोटे से जीवन में कितना कुछ देखा, महसूस किया, सीखा। फिर भी फौजी बाइफ के जीवन के बारे में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो लोगों को पता ही नहीं हैं।'

उन्होंने विवाह के बाद की कहानी को, लखनऊ से ग्वालियर, फिर ब्यास पंजाब; फिर जम्मू कश्मीर के अनंतनाग और रतनचक; इसके बाद शिलांग, मेघालय; सिक्किम के नाथुला पास, अरुणाचल प्रदेश की मैकमोहन रेखा, नागालैंड का कीड़ा बाजार, कर्नाटक के बेंगलुरु, सियाचिन बेस आदि के अनुभवों को साझा किया है।

अनुपम मोहला ने अपने संस्मरण को 'यह जीवन नहीं, तपस्या है' शीर्षक दिया है। उन्हें 16 वर्ष की पत्रकारिता का अनुभव है और वे कार्डसलिंग साइकोलॉजिस्ट हैं। वर्तमान में मथुरा में रहकर पेरेंटिंग कोच और लेखिका की भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने लखनऊ, पठानकोट, शाहजहांपुर, राजौरी तथा दिल्ली एसएफ क्वार्टर्स समेत विभिन्न स्थानों के अपने विचारों को प्रकट किया है। वास्तव में, उनका जीवन अब तक तपस्या की तरह गुजरा है।

कपूरथला में जन्मी बलजीत सिंघा ने अपने संस्मरण 'जीतना मेरी फितरत है' में लिखा है कि उनका फौज से रिश्ता नया नहीं रहा, उनके पिता फौजी अफसर थे। बाद में पति भी फौजी मिले। वह किसी चीज को पाने के लिए शिद्दत से समर्पित हो जाती हैं और हर इच्छित लक्ष्य को प्राप्त कर लेती रही हैं। अंत में उन्होंने अपने लेखिका बनने और इस



एडवोकेट ब्रांच में कैप्टन के पद पर रही हैं। बाद में उन्होंने अन्य कई पदों पर काम किया है। आजकल सामाजिक कार्यों से जुड़ी हैं। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा 'इस जिंदगी ने मुझसे लिया बहुत, पर दिया भी बहुत'। उन्होंने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के सभी अनुभवों को बारी-बारी से उद्घाटित किया है।

मेजर भावना चौहान ने अपना संस्मरण 'मेरा सफर : एक सैनिक से संगिनी तक' लिखा है। वे दूसरी पीढ़ी की भारतीय सैन्य अधिकारी हैं। उन्होंने ऑपरेशन पराक्रम में सहयोग किया है। वे एक पब्लिशड ऑथर भी हैं; उनका उपन्यास 'व्हेयर गर्ल्स डेयर' पेंगुइन रैंडम हाउस ने छपा है। मार्च 2001 में वे एक सैन्य अधिकारी बनती हैं और 2 साल बाद मई 2003 में उनकी शादी कैप्टन पुलकित से होती है। टाइम मैनेजमेंट समेत कई सकारात्मक पहलुओं के माध्यम से उन्होंने जो मुकाम हासिल किया उसे उन्होंने वर्णित भी किया है।

नीति पारती एक आरजे और टीवी कलाकार रही हैं। वे वर्तमान में शिक्षाविद् और लेखिका भी हैं। उन्हें फोटोग्राफी में रुचि है; वर्तमान में वह गुरुग्राम में रह रही हैं। 'उम्मीद की किरणें' नामक संस्मरण में उन्होंने अपने अनुभवों को साझा किया है। उन्होंने बचपन के खट्टे मीठे और यादगार पलों को बड़ी साफ कोई से लेख में संकलित किया है। कैची साइकिल की उड़ान और स्कूटर उड़ान से लेकर कार चलाने तक की बेकरारी का वर्णन है। इस लेख का अंत उन्होंने कविता से किया है, जिसमें लेखक, संपादक और फौजी जीवन की संगति का चित्रण है।

नित्या शुक्ला एक प्रतिभाशाली और उभरती हुई लेखिका हैं। उन्हें लेखन के लिए कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्होंने अपनी कथा-व्यथा को 'जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है' के अंदर समाहित किया है। उन्होंने दक्षिण भारत से मध्य भारत और मध्य

पुस्तक की संपादक से मिलने की घटना को भी वर्णित किया है।

सुखजीत सानेवाल

आर्मी के जज

भारत से जम्मू तक की यात्राओं का बैहद उम्दा रेखांकन किया है। क्योंकि फौजियों के लिए देश से बढ़कर कुछ नहीं होता; उन्होंने भी अपने लेख का अंत इस प्रकार किया है 'राष्ट्र धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं।'

रंजीत सहाय अशेष एक प्रतिष्ठित लेखिका हैं। वे क्षितिज संस्था की संस्थापक हैं और नवोदित कवियों को मंच भी देती हैं। उन्हें कई सम्मान मिल चुके हैं। वह सैन्य अफसर की पत्नी हैं, मथुरा में पोस्टेड हैं। उन्होंने डायरी लेखन का श्रेय संपादक वंदना यादव को दिया है और बड़े दिलचस्प अंदाज में अपना संस्मरण प्रस्तुत किया है।

शीबा कांत जम्मू में टेक वन टेलीविजन फॉर टेक्नोलॉजी कंपनी में जनरल मैनेजर हैं। वह एक पेशेवर कलाकार, एंकर और कवयित्री हैं। उनके संस्मरण 'वो गुजरा कल फिर याद आने लगा है...' 1992 में कंबोडिया से शुरू होता है। इसके बाद भारत के विभिन्न शहरों से होता हुआ, उनकी एक कविता पर पूर्ण होता है।

वर्षा रानी, जोकि वर्तमान में तेजपुर असम में रह रही हैं और जनसंपर्क अधिकारी तथा समाजसेविका हैं। लेखन में उनकी दिलचस्पी है और उन्हें कुछ पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। असल में, फौजियों की पत्नियों के किस्से कुछ तो अलहदा होते हैं। वर्षा जी ने बड़े ही सधे अंदाज में पहली मुलाकात से लेख की शुरुआत कराई है। इसके बाद विवाह और विवाह के बाद वही सैनिक पत्नी का जीवन और पक्षियों की तरह यहां से वहां की उड़ान!

प्रस्तुत पुस्तक में सभी संस्मरण बड़े ही दिलचस्प और रोचक हैं; कहीं खट्टे मीठे अनुभव हैं तो कहीं कठिनाइयों का गुबार! इस पुस्तक के संयोजन से दिख रहा है कि संपादक ने बड़ी ही मेहनत से काम किया है। ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली ने इसे उतने ही बेहतर ढंग से प्रकाशित भी किया है। भाषा बोलचाल वाली है और शैली सधी तथा प्रवाहपूर्ण है।

पुस्तक :

सैनिक पत्नियों की कथा और व्यथा

समीक्षक : शिव मोहन यादव

संपादक : वंदना यादव

मूल्य : 400

प्रकाशक : ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली